आचार्य
श्री नरेंद्र मोदी
ACHARYA (CHANCELLOR)
SHRI NARENDRA MODI
उपाचार्य
प्रो. विद्युत चक्रवर्ती
UPACHARYA (VICE-CHANCELLOR)
PROF. BIDYUT CHAKRABARTY

विश्वभारती
VISVA-BHARATI

(Established by the Parliament of India under
Visva-Bharati Act XXIX of 1951
Vide Notification No. : 40-5/50 G.3 Dt. 14 May, 1951)

संस्थापक
रवीन्द्रनाथ ठाकुर
FOUNDED BY
RABINDRANATH TAGORE

शांतिनिकेतन - 731235
SANTINIKETAN - 731235
जि.वीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत
DIST. BIRBHUM, WEST BENGAL, INDIA
फोन Tel: +91-3463-262 451/261 531
फैक्स Fax: +91-3463-262 672
ई-मेल E-mail: vice-chancellor@visva-bharati.ac.in
Website: www.visva-bharati.ac.in

सं./No.______________ दिनांक/Date.______________

मेरा आठवाँ संदेश

विश्वभारती पर आश्रित मेरे सहयोगी, छात्र और अन्य हितधारकगण !

8 August, 2020

विश्वभारती का विचार

विश्वभारती में लगभग दो वर्ष के मेरे कार्य काल में, सबसे कठिन मुद्दा जो मुझे सबसे ज्यादा परेशान करता है, वह है विश्वभारती का विचार। यह क्या है? क्या यह केवल कुछ वैधानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद डिग्री के वितरण के लिए शिक्षा का केंद्र है? क्या यह ऐसा माहौल बनाने के बारे में है जिसमें शिक्षा को थोपा नहीं गया हो बल्कि स्वाभाविक रूप से विकसित किया गया हो? क्या यह किसी के स्वार्थ को पूरा करने के लिए हर सीमा को पार करने की जगह है? क्या यह वह जगह है, जहां अभिव्यक्ति,रबींद्रिक,का सहारा हर किसी के द्वारा लिया जाता है, चाहे वह गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर के अनुरूप हो या नहीं? क्या यह एक ऐसी जगह है जहाँ कोई एक मानवीय मिशन के लिए एक साथ रहने की कला सीखता है। ऐसे अनेक प्रश्न हैं क्योंकि दशकों से विश्वभारती का महत्व घटता जा रहा है। इसके लिए विश्वविद्यालय के संचालन से जुड़े एवं विभिन्न प्रकार से लाभ उठाने वाले व्यक्ति जिम्मेदार हैं। निस्संदेह, पतन को रोकने की कोशिशें की गई पर यह प्रयास इतना सबल नहीं था कि उन लोगों के बुरे इरादों पर पानी फेर सके। परिणामस्वरूप, विश्वभारती को बहुत नुकसान हुआ; कभी नियुक्ति नियमों की अवहेलना करते हुए कुलपति को गिरफ्तार किया गया; जिन्हें चुना गया,उन्हें फिर से संपरीक्षण से गुजरने के लिए कहा गया।शैथिल्य के कारण,विश्वभारती की प्रमुख भूमि निजी लाभ के लिए उपयोग की जाने लगी। सभी के लिए चौतरफा लाभ का स्रोत होने के बावजूद, विश्वभारती की देखभाल के लिए कोई न रहा। विश्वभारती की कीमत पर हममें से अधिकांश ने मजे किए।रबींद्रिक कहलाने वाले एक बड़े दल के पीछे काफी अनावश्यक खर्च किया गया। बहुत विरोधाभासी

है कि एक विरासत परिसर, विश्वभारती, उत्कृष्टता का केंद्र होने के बजाय, उन तत्वों के लिए एक शरणार्थी स्थल बनता जा रहा है, जो गुरुदेव के जीवन भर लड़ने वाले आदर्शों के विपरीत काम करते हैं। यह सामान्य बात है कि गुरुदेव न केवल एक मार्गदर्शक थे, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने जीवन को मौलिक रूप से प्रचलित सामाजिक-आर्थिक वास्तविकता में परिवर्तन करने के लिए समर्पित कर दिया था, जो कि जान-बूझकर समाज में विभाजनकारी सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से कलुषित थे।

एक समाज सुधारक, कवि ने औपनिवेशिक भारत में प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद मानव जीवन के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए पूर्ण प्रयास किया। व्यावहारिक होने के नाते, कवि ने विकास के लिए भी तंत्र विकसित किया जिसने विश्वभारती के आसपास के गांवों के लोगों को आसानी से आकर्षित किया। उनके विचारों की संकल्पना 1904 के *स्वदेशी समाज* में व्यक्त की गई, जिसमें भारतीय गांवों को आत्मनिर्भर बनाने की उनकी दिली इच्छा जाहिर की गई। सावधानीपूर्वक अध्ययन करने पर पता चलता है कि कई मायनों में टैगोर के मॉडल में एवं Village Communities in the East and West (1871) में हेनरी मैने के विचार में समानता थी, जिसमें लेखक ने पूर्व के तथाकथित ग्राम गणराज्यों की सराहना की थी जो बुनियादी जरूरतों और आवश्यकताओं के मामले में टैगोर के साहित्यिक ग्रंथ में उदाहरण हैं कि किस प्रकार कवि ने विचारों को अधिक स्पष्ट तरीके से व्यक्त किया। उदाहरण के लिए, घरे बायरे (1916) में निखिलेश ने,दैनिक उपयोग के लिए आवश्यक वस्तुओं जैसे साबुन, मोमबत्ती इत्यादि स्वदेशी उद्योगों को विकसित करने के लिए एक प्रयास किया। इसी तरह, सोहिनी ने अपनी लघु कहानी Laboratory में वैज्ञानिक अनुसंधान एवं संबंधित ज्ञान-वृद्धि हेतु स्वतंत्र रूप से डिजाइन तैयार की। इन उदाहरणों को केवल यह दिखाने के लिए उद्धृत किया गया है कि गुरुदेव केवल एक ऐतिहासिक नहीं बल्कि एक सभ्यतावादी व्यक्ति थे। हमलोग प्रगतिवादी औपनिवेशिक लेख के बारे में स्वतंत्र रूप से सोच तक नहीं सकते थे।उन्होंने भारत को उन परिस्थितियों में आगे ले जाने के लिए उपयुक्त डिजाइन तैयार करते हुए इसे कार्य रूप मे परिणत किया। यहाँ इस बात पर जोर दिया जाना आवश्यक है कि कम उम्र में ही प्रबुद्धता के मूल्यों से अवगत होते हुए भी, वह अपने पिता, महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर एवं ब्रह्म समाज के उनके सहयोगियों से भारत के प्राचीन ग्रंथों से सीखने के लिए समान रूप से दृढ़ संकल्प थे। उन्होंने भारत की खोई हुई बौद्धिक परंपराओं को वापस लाने के लिए कड़ी मेहनत की। यह महर्षि और अपने देशवासियों के लिए एक रहस्योद्घाटन था जिसे उन्होंने ब्रह्म समाज का रूप देकर कार्यान्वित किया। यह मानव अस्तित्व के एक नए आयाम को विकसित करने के लिए उपनिषदिक ग्रंथों पर आधारित था। अपने पिता के साथ भावनात्मक रूप से बहुत करीबी होने के नाते, गुरुदेव ने उनसे जो कुछ भी सीखा, उसके आधार पर उन्होंने एक विचारधारा विकसित किया। शांतिनिकेतन,विश्वभारती के रूप में विकसित हुआ, जो न केवल एक विश्वविद्यालय

था, बल्कि एक ऐसा स्थान था जहाँ स्पष्ट रूप से विचार व्यक्त किए जा सकते थे, यत्र विश्वं भवत्येकनीडम(पूरी दुनिया अपने सभी विविधता के साथ पक्षी का पिंजरा) है। विश्वभारती इस प्रकार एक विचार,मानव अस्तित्व की अवधारणा की एक प्रणाली,सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से विविध मनुष्यों को समायोजित करने के लिए एक डिजाइन है

इस संदेश के लिए इतनी लंबी प्रस्तावना क्यों?

विश्वभारती का स्तर तेजी से नीचे की ओर जा रहा है। गिरावट की गति अप्रत्याशित हो सकती है, हालांकि जो सबसे रोमांचक है वह विश्वविद्यालय के साथ जुड़े अधिकांश लोगों का प्रयास है जो सामूहिक रूप से इसके पहले के गौरव को वापस लाने के लिए सामूहिक रूप से काम कर रहे हैं। दो साल के करीब परिसर में रहते हुए, मैं यह कह सकता हूं कि मैंने इसके सुधार के लिए सामूहिक उत्साह का अनुभव किया है, न केवल ज्ञान के प्रचार - प्रसार के लिए एक केंद्र के रूप में, बल्कि सामुदायिक अस्तित्व के लिए सामान्य लाभ हेतु मॉडल प्रस्तुत करनेके लिए भी। विश्वभारती इस प्रकार वसुधैव कुटुम्बकम (दुनिया एक परिवार है) के सिद्धांतवाक्य को पुष्ट करती है। विश्वभारती के इतिहास का अवलोकन करने पर पता चलता है कि आरंभ से ही गुरुदेव ने आश्रम के जीवन को इस भावना के संदर्भ में व्यवस्थित किया था, जो वर्ग, पंथ और रंग का भेदभाव किए बिना आश्रमवासियों को साथ रखते थे। गुरुदेव का उद्देश्य ग़ालिब की अवधारणा की तरह दूसरों को बदलने की अपेक्षा स्वयं को बदलना था। ग़ालिब के शब्दों में " उम्र भर 'ग़ालिब' यही गुनाह करता रहा। धूल चेहरे पे थी और आईना साफ करता रहा॥"

तो, यह संदेश है चिंतन का आह्वान। आइए हम अपने संसाधनों को देखें जो विश्वभारती को उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में आगे ले जाने के लिए उपयोगी हैं। कुछ मामलों में, विश्वविद्यालय अद्वितीय है, इसकी बराबरी करना आसान नहीं है। विश्वभारती संगीत, कला और सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में अग्रगण्य है जो दुनिया भर से छात्रों को आकर्षित करते हैं। इन स्कूलों में केवल विभिन्न देश के छात्र ही नहीं, बल्कि शिक्षण संकायों के मामले में भी यह समान रूप से वैश्विक है। हमारे स्नातक की माँग हर जगह है क्योंकि वे विशिष्ट प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, श्रीनिकेतन में पल्ली शिक्षा भवन और पल्ली संगठन विभाग में ऐसे हैं, जो ग्रामीण पुनर्निर्माण के क्षेत्र में सैद्धांतिक और व्यावहारिक अध्ययन का एक रचनात्मक सम्मिश्रण हैं।ये विभाग ग्रामीण जनता के बीच शिक्षा के प्रसार में टैगोर की पहल का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें अपनी आजीविका कमाने के लिए कौशल से भी लैस करते हैं। उदाहरण के लिए, शिल्प सदन,ग्रामीण शिल्प, प्रौद्योगिकी और डिजाइन के लिए एक विशेष केंद्र है।चूँकि पाठ्यक्रम भी अभ्यास-चालित है,इन विभागों के स्नातकों को ग्रामीण पुनर्निर्माण के सिद्धांत और विभिन्न कार्यों और डिजाइनों के माध्यम से इसकी प्राप्ति दोनों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

शांतिनिकेतन में भाषा भवन, विद्या भवन, शिक्षा भवन भी हैं, जो संबंधित क्षेत्रों में ज्ञान के प्रसार के लिए विशिष्ट रूप से जाने जाते हैं। कुछ संकाय अपने आप में अच्छे हैं, पर सामूहिक रूप से वे उनकी क्षमता को नहीं दर्शाते हैं। यह दुखद है कि

संभवत: सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में;कमोबेश,विश्वभारती में,कुछ संकाय व्यक्तिगत कारणों से अलग हैं जिसका संबंध न तो वैचारिक और न ही विकास व परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक मॉडल के लिए बौद्धिक प्राथमिकताओं पर आधारित हैं। यह भी दुःख की बात है कि निजी मतभेद कभी-कभी इतनी बढ़ जाती है कि कुलपति या उच्च अधिकारियों को विभाग में सामान्य स्थिति लाने के लिए हस्तक्षेप करने की आवश्यकता होती है। विनय भवन एक और महत्वपूर्ण केंद्र है जो अच्छी तरह व्यवस्थित है। यह कष्टकर है कि हमारे सहयोगियों की पूरी क्षमता का उपयोग नहीं किया जाता। यह न तो बुनियादी ढांचे की कमी के कारण है और न ही सहकर्मियों के बीच आपसी संबंधों को विकसित करने में हमारी विफलता को छोड़कर किसी भी अन्य कारक के कारण। उम्मीद है कि विचार में सामंजस्य से इस स्थिति में सुधार होगा।

कई भवन हैं जो विश्वभारती के केंद्र भी हैं। प्रत्येक भवन के योगदान को गिनाने के बजाय,यह कहना पर्याप्त होगा कि उनमें से प्रमुख रूप से रबींद्र भवन है जिसमें सभी घर हैं जहाँ गुरुदेव शांतिनिकेतन में रहने के दौरान निवास करते थे।इसमें उनके जीवन से जुड़े कलाकृतियों का संग्रहालय है। उनके चित्रों और कई साहित्यिक कृतियों की पांडुलिपियाँ हैं जो उनकी श्रेष्ठता की पुष्टि करते हैं। जो लोग शांतिनिकेतन आते हैं, उनके लिए रबींद्र भवन जाना तीर्थ यात्रा है और विश्वविद्यालय के लिए, पर्यटकों का आगमन निरंतर आय का स्रोत है। रबींद्र भवन के अलावा बंगलादेश भवन अपनी स्थापत्य सुंदरता के लिए अद्भुत होने के साथ-साथ, भारत और बांग्लादेश के बीच राजनीतिक-सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। गुरुदेव टैगोर सांस्कृतिक सेतु हैं क्योंकि उन्होंने न केवल सीमा के दोनों किनारों पर बंगालियों के लिए एक समृद्ध विरासत विकसित की, बल्कि इन दो महान देशों को राष्ट्रगान भी दिया। बंगलादेश सरकार के सहयोग से एवं भारत सरकार की सहायता से बंगलादेश भवन,इन दो देशों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए एक मजबूत कदम है जो सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। यह असामान्य नहीं है क्योंकि विश्वभारती के इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं: 1937 में स्थापित चीन भवन, 1954 में स्थापित निप्पॉन भवन (हालांकि 1905 में जापानी भाषा की पढ़ाई शुरू हो चुकी थी) बाहरी संरक्षक की सहायता से स्थापित किए गए थे।

एक शैक्षणिक केंद्र के रूप में, विश्वभारती के पास महान रबींद्रिक विरासत होने के अलावा गर्व करने के कारण हैं। यह सच है कि विभिन्न विभागों में ऐसे संकाय सदस्य हैं जिन्होंने अपने क्षेत्र में अपेक्षित योगदान नहीं दिया है। फिर भी, ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने गुणवत्तापूर्ण योगदान दिया है।मैंने पाया है कि एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो रहा है जिसमें अपेक्षाकृत युवा संकाय सदस्यों को उनके वरिष्ठ समकक्षों के अनुभव का लाभ मिल रहा है। दुनिया भर में प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के विकास का अवलोकन यह पुष्टि करता है कि सफलता के लिए विभागों में युवा और वरिष्ठ संकाय सदस्यों के बीच स्वस्थ संवाद आवश्यक है। दो मामलों में, यह एक उल्लेखनीय विकास है: न केवल यह संकाय सदस्यों के बीच के अंतर को मिटा देगा,

बल्कि यह उन लोगों के बीच अंत:विषय सहयोग भी सुनिश्चित करेगा जो अब विश्व स्तर पर बड़े उत्साह के साथ देखे जा रहे हैं।

हमारा पुस्तकालय बहुत उपयोगी है। इसमें पुस्तकों का विशाल संग्रह है। पुस्तकालय डिजीटल और पारंपरिक दोनों साँचे में काम करते हैं। हमें जल्द ही पूरे संग्रह को डिजिटल करने की उम्मीद है। जो पाठकों की मदद करने में शामिल हैं वे सटीक संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम हैं। इसके अलावा, मुझे उस दक्षता के स्तर की सराहना करनी चाहिए जिसके साथ नई किताबें खरीदी जाती हैं। पत्रिका अनुभाग समृद्ध है और मांग पर आसानी से उपलब्ध है। यह प्रशंसनीय है क्योंकि हमारे पुस्तकालय के कर्मचारी न केवल पाठकों द्वारा खोजे जा रहे पुस्तकों को ढूढ़ने में मददगार हैं, बल्कि अंतर-पुस्तकालय ऋण प्रणाली के माध्यम से अपेक्षित स्रोत प्राप्त करने में भी उनकी सहायता करते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि पुस्तकालय में नियमित रूप से वेबिनार आयोजित की जा रही है। मुझे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में कुछ वेबिनार में भाग लेने का अवसर मिला है। मुझे बिना गड़बड़ी के वेबिनार के आयोजन के लिए पुस्तकालय कार्मिकों की सराहना करनी चाहिए जो परिसर में हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी की सामयिक अनुपस्थिति को देखते हुए संभव नहीं लगता। यूजीसी के कहने पर, पुस्तकालय ने आंतरिक संसाधनों के साथ गांधीजी के सामाजिक-राजनीतिक विचारों पर एक वेबिनार आयोजित किया है; इसे उन लोगों द्वारा काफी सराहा गया, जो गाँधीवादी विचारधारा पर अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं। वास्तव में, यह भारतीय राष्ट्रवादी विचार के विभिन्न पहलुओं पर कई अन्य वेबिनार की शुरुआत है, जो कि वैचारीकरण के एक प्रमुख विषयगत डिजाइन की मजबूत पकड़ के कारण पर्याप्त विश्लेषणात्मक जांच के अभाव में प्राप्त नहीं हुआ था। शांतिनिकेतन का विचार "सब कुछ से अधिक प्रिय" होने के कारण, हमारे आश्रम संगीत के प्रथम वाक्य को उद्धृत करने से उन लोगों में एक आंतरिक शक्ति उत्पन्न होती है जो उस शांत वातावरण से जुड़े होते हैं जिसमें विश्वभारती एक आश्रम के रूप में विकसित हुई है।यह गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और उनके हमवतन लोगों की नि: स्वार्थ कड़ी मेहनत से जो मानवता के लिए उनकी चिंता से समान रूप से प्रेरित थे, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो सामाजिक-आर्थिक रूप से हाशिए पर थे और बड़े पैमाने पर पक्षपातपूर्ण लाभ के लिए मानव द्वारा कृत्रिम पदानुक्रम के शिकार थे।

संदेशों की इन शृंखलाओं का उद्देश्य किसी को अपमानित करना नहीं है, बल्कि उन सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक मूल्यों और विचारों को दोहराना है जिसके फलस्वरूप 1921 में विश्वभारती की स्थापना हुई। यह प्रत्येक के लिए आत्मनिरीक्षण का विषय है जो विश्वभारती के गौरव को वापस लाने के लिए तत्पर है। हो सकता है कि कोई अप्रिय सच्चाई से परेशान हो गए हों क्योंकि संदेशों को सार्वजनिक पटल पर उन लोगों के लिए रखा है,जो वास्तविक अर्थों में रबींद्रिक हैं, इस दृष्टिकोण को एकमत से स्वीकार करते प्रतीत होते हैं कि विश्वभारती को और अधिक गिरावट से रोकने के लिए देखभाल

की आवश्यकता है। मैं परिसर के भीतर होने वाली किसी भी चीज़ के लिए एक आसान लक्ष्य हूं, हालांकि यह सामान्य जानकारी का विषय है कि कुलपति एक दल का हिस्सा है, जिसके सदस्यों को विश्वभारती को सुचारू रूप से चलाने के लिए मासिक वेतन का भुगतान किया जाता है। इसका संचालन भारत सरकार के नियमों और विनियमों के साथ विश्वभारती के 1951 के अधिनियमों और विधियों के अंतर्गत किया जाता है। मैं एक दल का प्रतिनिधित्व करता हूं जो विश्वभारती,मानव संसाधन विकास मंत्रालय और पश्चिम बंगाल सरकार एवं भारत सरकार के अन्य संबंधित विभागों के प्राधिकारियों द्वारा गठित की गई है। विश्वभारती की स्थिति के बारे में मेरी समझ का परिणाम गलत हैं।जब तक सब मिलकर इसके हित में कार्य नहीं करेंगे यह पूर्व की भाँति गौरव प्राप्त नहीं कर सकेगा।विश्वभारती का अस्तित्व हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है और हमें सामाजिक-राजनीतिक उद्देश्यों के लिए पूरी तरह से समर्पित होकर इसकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जैसा कि गुरुदेव ने किया था।

क्या किया जाना आवश्यक है?

यह गलत तरीके से नहीं समझा जाना चाहिए कि मैं जो कुछ भी कहूंगा वह स्वयंसिद्ध है। वे केवल विश्वभारती के हित में मेरे सुझाव हैं : -

1) गुरुदेव के आह्वान,साथ मिलकर नाचें,गाएं और जिंदगी के मजे लें,का अनुसरण करते हुए आइए विश्वभारती के लिए एक साथ काम करते हैं । आइए संस्था के लिए एक साथ रहने की भावना को मजबूत करें जो इसके संस्थापक गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर से जुड़ी हुई विरासत को संभाले हुए हैं।

2) मासिक वेतन पाने वालों के लिए आजीविका का स्रोत होने के नाते,विश्वभारती के कमजोर होने पर आजीविका हेतु मासिक वेतन पर निर्भर रहने वालों के लिए बहुत मुश्किल स्थिति हो जाएगी। परिसर के बाहर के लोगों के लिए, जो अपनी आजीविका भी प्राप्त करते हैं, विश्वभारती उतने ही उपयोगी हैं, जितने इसके कर्मचारी।

3) विश्वभारती सिर्फ प्रमाणपत्र बाँटने वाला प्राधिकरण नहीं है। यह जीवन का एक मार्ग है, एक वैचारिक मिशन जो गुरुदेव के लंबे अनुभवों पर आधारित है।उन्होंने परिकल्पना की कि कैसे पदानुक्रमित विभाजन के भेदभाव से युक्त चंद लोगों द्वारा असहाय बहुसंख्यक की कीमत पर लाभान्वित होने वालों से अलग समावेशी समाज विकसित किया जाए। जिन लोगों को रबींद्रिक होने पर गर्व है, उनका नैतिक कर्तव्य है कि वे उस भावना को धारण एवं प्रसारित करें, जो गुरुदेव ने विश्वभारती को ज्ञान प्रसार केंद्र के रूप में विकसित करने के दौरान परिपोषित किया था।

4) इन संदेशों का उद्देश्य किसी भी परिस्थिति में रक्षात्मक होना नहीं है। मुझे लगता है कि मंदिर में बुधवार की प्रार्थना में भाग लेना विश्वभारती संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसलिए मैं उन लोगों की आलोचनाओं की परवाह किए बिना उन पर

जोर देता रहूंगा, जो विश्वविद्यालय के लिए अपने कर्तव्यों को आसानी से भूलकर अपने अधिकारों के बारे में बात करते हैं जो उनकी आजीविका का स्रोत है। यहां अपने सहयोगियों के साथ निरंतर बातचीत करने के बाद, मुझे नहीं मालूम कि उनके अकादमिक ज्ञान के आधार पर उनकी क्या अहमियत है। कुछ को छोड़कर, हम में से अधिकांश ने केवल शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करना पसंद किया है जो विश्वविद्यालय के शिक्षण के दो पहलुओं में से एक है; दूसरा पहलू शोध के परिणाम के बारे में है। मैं इस बात से इनकार कर रहा हूं कि हम उत्पादन नहीं करते हैं।हमारी वार्षिक रिपोर्ट से पता चलता है कि उनमें से कई शैक्षणिक कठोरता की कसौटी पर खड़े नहीं होंगे जो आमतौर पर गंभीर शैक्षणिक प्रक्रिया में स्वीकार किए जाते हैं।

5) यह मेरे लिए अजीब बात है कि स्थानीय व्यवसायी अपनी चिंताओं को व्यक्त करते हैं और पौष मेला और बसंत उत्सव के आयोजन को समाप्त करने के विश्वविद्यालय के निर्णय को रबींद्रिक विरोधी के रूप में गलत ठहराते हैं, हालांकि वे परिसर में होने वाले किसी भी अन्य कार्यक्रमों में मुश्किल से ही भाग लेते हैं। कारण सरल है: पौष मेला एवं बसंत उत्सव आय का स्रोत है। लेकिन,बुधवार के मंदिर प्रार्थना में या बैतालिक में भाग लेने से उन्हें पैसे कमाने में मदद नहीं मिलती है। इसलिए ये घटनाएँ इन पाखंडी रबींद्रिकों को कैसे आकर्षित कर सकती हैं?

6) गुरुदेव और उनकी विरासत का उपयोग,धन कमाने वाली योजनाएँ,एक ऐसा काम है जो स्थानीय व्यापारी, विश्वविद्यालय के अंदरूनी सूत्रों की मिलीभगत से सालों से करते आ रहे हैं। अब तक, इन धोखाधड़ी मामलों में कोई प्रशासनिक कार्रवाई नहीं हुई है,शायद इसलिए कि विश्वभारती समुदाय के सदस्यों में स्वामित्व की भावना का अभाव रहा है। शुक्र है कि आज का प्रशासन इन प्रथाओं को रोकने के लिए ठोस प्रयास कर रहा है। हालाँकि, इस सकारात्मक कदम के कारण कई अनैतिक और अव्यावहारिक परिणाम हुए, जैसे कि यौन उत्पीड़न के आरोप जो कि राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के आदेश के अनुसार पौष मेले को खत्म करने में शामिल दल के मुख्य सदस्यों पर लगाए गए थे। न्यायमूर्ति एके मुखर्जी, सत्र न्यायाधीश, बीरभूम द्वारा इन आरोपों का खंडन किया गया है, जैसा कि उनके बयान में स्पष्ट है कि "सी.डी. से पता चलता है कि किसी के अपमान का कोई दृश्य नहीं था ... "

7) विश्वभारती के मार्ग में एक और बाधा भूमि अतिक्रमणकारियों का मकड़जाल है, जिस विषय पर मैंने अपने छठे संदेश में विस्तार से चर्चा किया है। विश्वभारती की भूमि पर अवैध अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासन एमएचआरडी के 30 नवंबर, 2017 के निर्देश के अनुसार अथक प्रयास कर रहा है। जब भी विश्वविद्यालय ने अतीत में ऐसा करने की कोशिश की है, वह इस बुरी प्रथा से कुटिल लाभार्थियों के विरोध को कुचलने में कामयाब रहा है। इतिहास खुद को दोहराता प्रतीत होता है, क्योंकि वर्तमान प्रशासन उक्त लाभार्थियों के दुर्व्यवहार का सामना कर रहा है।

मैं अपने सहयोगियों, छात्रों और अन्य हितधारकों से अपील को दोहराते हुए इस संदेश को समाप्त करता हूं कि विश्वभारती के गौरव को बहाल करने के लिए सौहार्द्रपूर्ण ढंग से काम करें। हमें यह संस्थान महान विरासत के रूप में मिला है और अब

यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम इसे महान रूप में भावी पीढ़ी को सौंपें। आइए साथ मिलकर अपनी जानी-अनजानी भूल को सुधारते हुए गुरूदेव के मूल्य एवं आदर्श के प्रति प्रतिबद्धता दिखाएँ। जैसा कि मैंने अपने पिछले संदेशों में कहा था, इस कठिन समय में, हमें उन लोगों के प्रति सुरक्षात्मक होना चाहिए जो कोविद -19 के शिकार हैं, और साथ ही, हम अदृश्य लेकिन विनाशकारी घातक वायरस से बचने के लिए एक व्यवस्थित आचरण को दिनचर्या बनाएँ।

भरोसा रखें।

बिद्युत चक्रवर्ती
०८/०८/२०२०
बिद्युत चक्रवर्ती

·विश्वभारती·
शान्तिनिकेतन

Vice-Chancellor
Visva-Bharati
Santiniketan
West Bengal-731235
India